वर्ष 7, अंक 3, सितम्बर 2014

हंसध्वनि

गृह पत्रिका

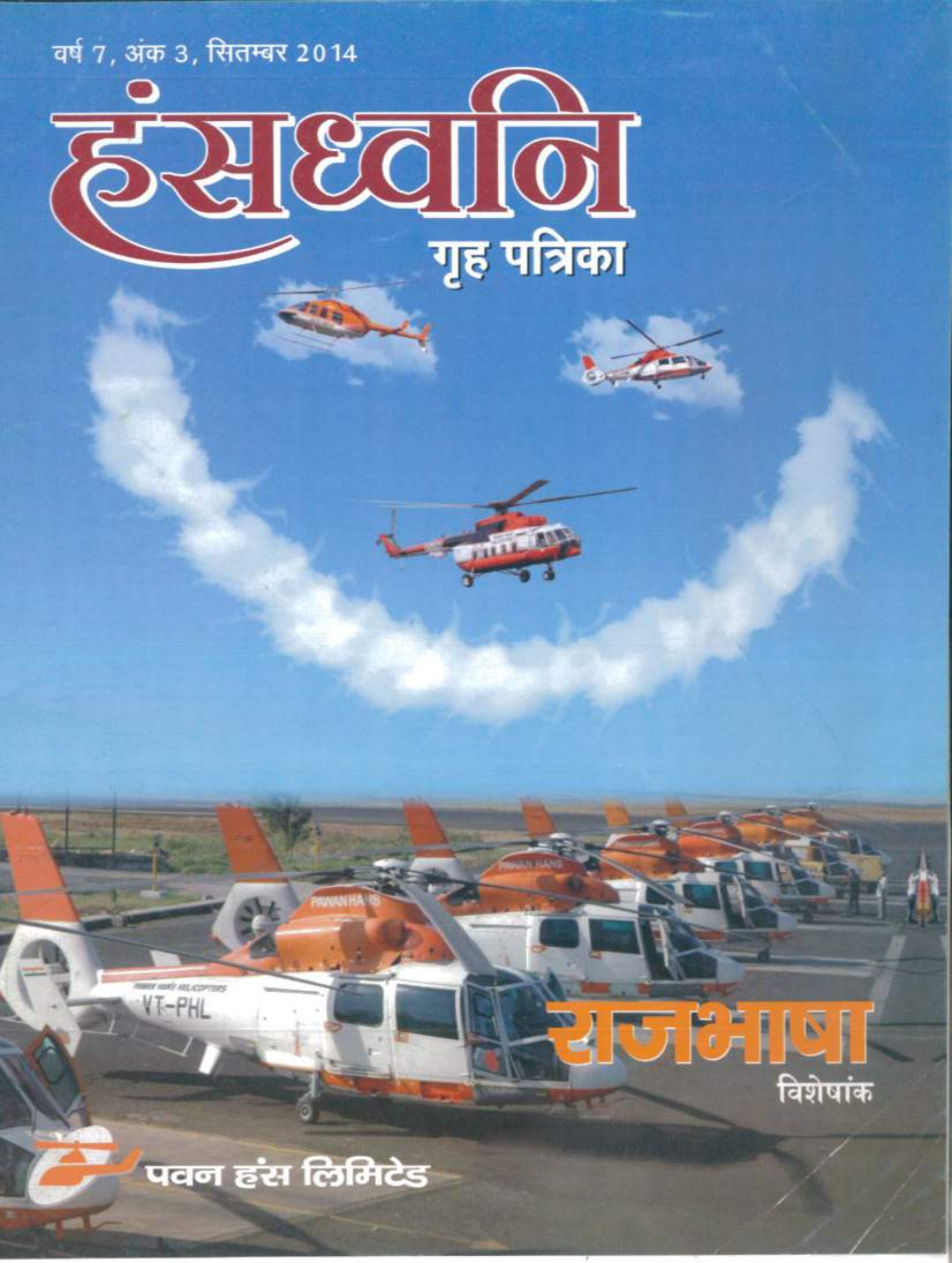

राजभाषा

विशेषांक

पवन हंस लिमिटेड

पवन हंस गीत

हम हैं हम हैं भारत की जीवन धारा
नाम है पवन हंस हमारा
मंजिल है आसमां
जीतेंगे सारा जहां
तेल क्षेत्र खेल क्षेत्र तीर्थों का मेल क्षेत्र
टूर हो या ट्रेवल हो
ट्रांसमिशन लाइन हो
दुर्गम पहाड़ हो या आपदा की मार हो
हम हैं हम हैं भारत की जीवन धारा
नाम है पवन हंस हमारा।

हंसध्वनि

गृह पत्रिका

संपादक

आर बी कुशवाहा

उपमहाप्रबंधक (प्रशासन)

संपादक मंडल

रामकृष्ण

प्रबंधक (निगम मामले)

रजनीश कुमार सिन्हा

अधिकारी (राजभाषा/निगम मामले)

अंजली बख्शी

अधिकारी (निगम मामले)

रेखा रानी

आशुलिपिक (हिंदी)

संपादकीय कार्यालय

पवन हंस लिमिटेड
सी-14 सेक्टर-1
नोएडा 201301
दूरभाष: 0120 2476734

ई मेल: corp.affairs@pawanhans.co.in
rajbhasha.ol@pawanhans.co.in

हंसध्वनि में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं और उन विचारों से पवन हंस लिमिटेड की सहमति आवश्यक नहीं है।

आंतरिक वितरण के उद्देश्य से खरी कसौटी प्रकाशन लखनऊ के प्रकाशन सहयोग एवं के सी प्रकाशन प्रा.लि. के मुद्रण सहयोग से पवन हंस लिमिटेड द्वारा प्रकाशित।

संदेश

श्री राजनाथ सिंह.....04
श्री पी. अशोक गजपति राजू.....05
श्री अजित सेठ.....06
श्री वी सोमसुन्दरन.....07
श्री अनिल श्रीवास्तव.....08

संपादकीय

श्री आर बी कुशवाहा.....09

पवन हंस का सिलसिला.....10

घमंड का फल
शास्त्रीय संगीत एक वरदान.....11
निर्भया
अजन्मी कन्या की पुकार
पवन हंस की पुकार.....12
घर का वैद्य.....13
हमारा इंडिया दिल से हिन्दी.....14

नन्हें हाथों का हुनर.....16
ध्यान योग.....19

सत्यमेव जयते

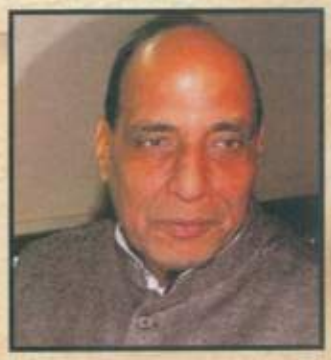

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

गृहमंत्री, भारत सरकार
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियों!

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

स्वाधीनता संग्राम के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर जोर दिया गया था। यह हमारा राष्ट्रीय मत था कि बिना स्वदेशी और स्वभाषा के स्वराज सार्थक सिद्ध नहीं होगा। हमारे तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं, विद्वानों, मनीषियों और महापुरुषों की यह दृढ़ अवधारणा थी कि कोई भी देश अपनी स्वाधीनता को अपनी भाषा के अभाव में मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता। हमें भारत में एक राष्ट्र की भावना सुदृढ़ करनी है तो एक सपंर्क भाषा का होना भी नितांत आवश्यक है। इस प्रकार हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का अंग एवं प्रेरणास्त्रोत के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त समझते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। हिंदी भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत के संविधान में वर्णित भावनात्मक एकता को सुदृढ़ करने का जरिया भी है। यह भाषा देश की एकता और अखंडता को बढ़ावा देने में भी सहायक रही है।

26 जनवरी 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होगी एवं इसकी लिपि देवनागरी होगी। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए इसका प्रचार-प्रसार एवं अभिवृद्धि सुनिश्चित करे।

विश्व के सभी प्रमुख विकसित और विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके समृद्ध और उन्नत हुए हैं। अशिक्षा, बेरोजगारी और गरीबी से उबरने के लिए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, इंजीनियरी, स्वास्थ्य सेवाओं जैसे अनेक क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी के माध्यम से शिक्षित करने की अहम आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने समय-समय पर पुरस्कार योजनाएं लागू की हैं। लेखक और प्रकाशक आधुनिक ज्ञान को सभी भारतीयों तक पहुंचाने में और भारत को एक महान एवं शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है, जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी में करने के लिए यह भी आवश्यक है कि भाषा को सरल एवं सहज बनाया जाए ताकि यह सभी के लिए बोधगम्य हो तथा इसका प्रयोग बहुआयामी हो सके।

मैं केन्द्र सरकार के अंतर्गत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने कार्यालयों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सार्थक एवं सतत् प्रयास करें। मैं अपील करता हूं कि इस संबंध में भेजी जाने वाली हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों में वास्तविक और तथ्यपरक आंकड़े एवं सूचनाएं ही दी जाएं। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है, किन्तु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूरे उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिंदी में करेंगे। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं सतत् प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे और देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नए आयाम देंगे।

जय हिंद!

नई दिल्ली
14 सितम्बर 2014

राजनाथ सिंह

पी. अशोक गजपति राजू
P. ASHOK GAJPATI RAJU

सत्यमेव जयते

नागर विमानन मंत्री
भारत सरकार
राजीव गांधी भवन
सफदरगंज हवाई अड्डा
नई दिल्ली -110003

MINISTRY OF CIVILAVIATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110003

संदेश

हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की शिरोमणी और सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा है। भारत की राजभाषा के रूप में इसकी गरिमा और महत्व सर्वोच्च है।

भारत के नागरिक के रूप में हमारा शासकीय दायित्व है कि हम अपनी राजभाषा, राष्ट्रभाषा का सम्मान करते हुए इसका अधिकाधिक प्रयोग, प्रचार एवं प्रसार कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें।

इससे न केवल अंतर्राष्ट्रीय स्वर पर हमारे देश की राजभाषा को सम्मानजनक दर्जा प्राप्त होगा बल्कि देश के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

अतः हिंदी दिवस 2014 के पावन अवसर पर हमारा यह संकल्प हो कि हम अपने शासकीय कार्य में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे और अपने इस शासकीय दायित्व का पूर्ण समर्पण भाव से निर्वहन करेंगे।।

'हिंदी दिवस 2014' की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(पी. अशोक गजपति राजू)

अजित सेठ
AJIT SETH

सत्यमेव जयते

मंत्रिमंडल सचिव
भारत सरकार
CABINET SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां अनेक भाषाएं बोली एवं समझी जाती हैं। हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है और यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा परस्पर व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिंदी के इसी महत्व के मद्देनजर 14 सितम्बर, 1949 को भारत के संविधान में इसे संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। तभी से 14 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

वास्तव में हिन्दी में काम करना आसान है। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इसे सरल एवं सहज रूप में लिखें। इससे यह हिंदी जानने वाले तथा हिंदी न जानने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा आसानी से समझी जा सकेगी और वे बेझिझक इसका प्रयोग कर सकेंगे।

हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कार्यालयों में मूल रूप में हिंदी में कार्य करने, हिंदी में टिप्पणी लिखने तथा हिंदी में अधिक पत्राचार करने को प्रोत्साहित किया जाए। वरिष्ठ अधिकारीगण बैठकों, चर्चाओं आदि में हिन्दी में बातचीत करें और राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में नियत लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत रुचि लें तथा स्वयं हिन्दी में कार्य करके कर्मचारियों के लिए उदाहरण पेश करें। आइए, हिंदी दिवस के अवसर पर हम एक बार फिर हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने का संकल्प लें।

हिन्दी दिवस पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितम्बर 2014

अजित सेठ

वि सोमसुन्दरन
V. SOMESUNDARAN

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
नागर विमानन मंत्रालय
नई दिल्ली -110003
SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CIVIL AVIATION
NEW DELHI - 110003

अपील

भाषा विचारों एवं भावों को व्यक्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। राष्ट्रीय स्तर पर भी भाषा उस राष्ट्र की अस्मिता, पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की संविधान सभा ने राजभाषा के रूप में देश में ऐसी भाषा का चयन किया जो सबसे अधिक बोली और समझी जाती है और यह दर्जा हिंदी को दिया गया।

वैश्वीकरण एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी की मांग दिन पर दिन बढ़ रही है। अतः राजभाषा के इस सम्मानजनक और शासकीय स्तर को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना काम हिंदी में करें। हिंदी दिवस हमें हर वर्ष यह स्मरण कराता है कि हम अपनी राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें। अन्य भाषाओं का ज्ञान विकास की दिशा में सहयोगी हो सकता है, परन्तु जहां राष्ट्रीय गौरव अथवा अस्मिता का प्रश्न हो वहां हमें यह सम्मान अपनी राजभाषा को ही देना होगा।

अतः हिंदी दिवस 2014 के इस शुभ अवसर पर मेरी सभी पदाधिकारियों से अपील है कि आप अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें। इसके प्रति पूर्ण निष्ठा, समर्पण एवं कर्तव्यपरायणता का भाव रखें ताकि राजभाषा नीति संबंधी लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ हिंदी जनसंपर्क का एक सर्वोत्कृष्ट माध्यम भी सिद्ध हो सके।

'हिंदी दिवस 2014' की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(वि. सोमसुन्दरन)

अनिल श्रीवास्तव (आईएएस)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
ANIL SHRIVASTAVA, IAS
Chairman-cum-Managing Director

पवन हंस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
PAWAN HANS LIMITED
(A Government of India Enterprise)

संदेश

हिंदी दिवस 2014

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक भारत की राजभाषा हिंदी अपने आप में एक समर्थ भाषा है। हिंदी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने और उन्हें अपने साथ लेकर चलने की अद्भुत शक्ति है। इस विशेषता के कारण ही भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए यह सबसे उपयुक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है।

भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाने के निर्णय के आलोक में प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वस्तुतः हिंदी दिवस का आयोजन भारतीय भाषाओं के मध्य सौहार्द के साथ हिन्दी को और बल प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाने वाला आयोजन है।

आज जबकि भारत और अन्य देशों में 60 करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम जैसे दूसरे देशों की अधिकतर जनता हिंदी बोलती है। भारत से सटे नेपाल की भी कुछ जनता हिंदी बोलती है। हिंदी राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

पवन हंस परिवार के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे अपने दिन-प्रतिदिन के कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का संकल्प लें और पवन हंस के सभी विभागाध्यक्षों से विशेष अनुरोध है कि वे स्वयं हिंदी में कार्य करें तथा अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़े के आयोजन को सफल बनाने का प्रयास करें। जितना कार्य मूल रूप से हिंदी में किया जाएगा, उतना ही हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा, हिंदी उतनी ही लोकप्रिय बनेगी।

शुभकामनाओं के साथ...

(अनिल श्रीवास्तव)

संपादकीय

आप सभी को हिंदी पखवाड़ा की हार्दिक शुभकामनाएं।

मित्रो, हमें उम्मीद है कि हंसध्वनि का नया रूप रंग और साज सज्जा के साथ नया कलेवर आप सबों को पसंद आ रहा है। इसकी सार्थक और सकारात्मक अभिव्यक्ति के रूप में हमें आपकी रचनाएं मिल रही हैं। इस प्रकार के अनवरत रचनात्मक योगदान के कारण इस अंक में आपके समक्ष विविधतापूर्ण सामग्री परोसी जा रही है।

मैं कामना करता हूं कि इस अंक की प्रत्येक रचना पवन हंस के बारे में एक नया नजरिया प्रदान करेगी।

हिंदी पखवाड़ा के आयोजन को और ऊर्जा व उत्साह प्रदान करने के मूल उद्देश्य से इस अंक की समस्त रचना सामग्री नए व हिंदी में लेखन के प्रथम प्रयास को समर्पित है। नई पहल की कविता, नई पहल की कहानी, नई पहल के चित्रांकन, नई पहल के मूर्तिशिल्प एक नए परिवेश के वाहक हैं जो हिन्दी पखवाड़े की सफलता के पूरक हैं।

अपने स्थापना काल से ही पवन हंस भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रति सजग रहा है। इस दिशा में सबसे पहले 1987 में इसका भारतीय नामकरण किया गया। दिनांक 15 अक्टूबर 1985 को 'हेलीकॉप्टर्स कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड' के नाम से स्थापित कंपनी का नाम दिनांक 05 मई 1987 को परिवर्तित करके पवन हंस लिमिटेड रखा गया। हेलीकॉप्टर परिचालक के रूप में स्पष्ट छवि के निर्माण हेतु दिनांक 28 जून 1996 को इसके नाम में आंशिक परिवर्धन करते हुए इसे 'पवन हंस हेलीकॉप्टर्स लिमिटेड' के रूप में मान्यता दी गई। परंतु हाल के वर्षों में पवन हंस द्वारा जिस प्रकार से विमानन और प्रशिक्षण संबंधी संस्थानों के माध्यम से वैविध्यपूर्ण सेवाएं प्रदान की जा रही है, दिनांक 27 दिसंबर 2012 को वार्षिक सामान्य बैठक में निदेशक मंडल द्वारा 'पवन हंस लिमिटेड' के रूप में इसका नवीन नामकरण किया गया।

मित्रो, हंसध्वनि का अगला अंक अंग्रेजी व हिंदी मिश्रित अंक होगा व अगले माह मनाए जाने वाले सतर्कता सप्ताह को देखते हुए यह सतर्कता विशेषांक के रूप में होगा। इसके सफल प्रकाशन हेतु आप सभी से रचनात्मक सहयोग की कामना है।

आपका

(आर बी कुशवाहा)

पवन हंस का सिलसिला

रीना कसाना की कलम से...

यूं ही चलता जाएगा पवन हंस का सिलसिला।
दिन पे दिन बढ़ता जाए यूं ही ये काफिला॥

आओ चलो मिलाऊं तुम्हें भी एक अलग संसार से।
पवन हंस के इस छोटे से परिवार से॥

ले चले हैं पवन हंस को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर।
श्रीमान अनिल जी हैं थामे हुए, इस पतंग की डोर॥

ना करते तकरार किसी से, ना करते कभी अनबन।
आप हैं हमारे महाप्रबंधक श्रीमान विजय पथियन॥

संभाली है जिसने उप महाप्रबंधक की कमान।
आप हैं हमारे श्रीमान सतनाम॥

माली जैसे पहचाने है, डाली का हर पत्ता।
वैसे ही श्रीमान अशोक पहचाने वायुयान उपकरणों की गुणवत्ता॥

बूंद-बूंद से जैसे भरता है सागर।
वैसे तकनीकों का समूह जोड़े हैं श्रीमान भटनागर॥

ना मिलेगा पवन हंस में विमान अनुरक्षण अभियंता ऐसा दूजा।
ये है हमारे श्रीमान सुनील जुनेजा॥

आओ मिलाऊं अब हमारे विभाग की जान और शान से।
सबकी करें परेशानियां हल, अपनी एक मुस्कान से॥

सहायता करते हैं सबकी बड़े प्यार से।
आओ मिलें हमारे श्रीमान दिलीप कुमार से॥

पवन हंस के पलसफे में जिसने बुना एक अलग कारवाँ।
वो है वरिष्ठ कार्यालय सहायक श्रीमती ऊषा मारवाह॥

कार्यालय में जिसने पाया सबका स्नेह बेशुमार।
वो हैं आपके श्रीमान प्रदीप कुमार॥

जानना चाहते होंगे आप भी किसने संजोया ये तराना।
मैं हूँ अभियांत्रिकी विभाग की रीना कसाना॥

रीना कसाना
आशुलिपिक- टंकक (अभि.)
उत्तरी क्षेत्र

घमंड का फल

गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी आदि अनेक नदियां इठलाती हुई चलती आ रही थी। वे कल-कल, छन-छन करके सागर के जल में गिर रही थीं। समुद्र बड़े ध्यान से उनका आना देख रहा था। उसने देखा कि किसी नदी का जल सफेद है, किसी का हरापन लिए हुए। नदियों के वेग के साथ कहीं बड़े-बड़े पहाड़ी पत्थर बहे चले आ रहे हैं, कहीं विशालाकाय वृक्ष तैर रहे हैं तो कहीं घास, फल, फूल और पत्ते दिख रहे हैं। समुद्र को उन नदियों के पानी में कभी भी दूब और सरकंडे दिखाई नहीं दिए। गंगा जब पास आई तो समुद्र ने पूछा- "गंगे, मैं देख रहा हूं कि तुम सब नदियां बड़े-बड़े वृक्षों और पत्थरों को बड़ी सहजता से बहा जाती हो, पर मैंने किसी के जल में सरकंडे बहते नहीं देखे, क्या बात है? वह तुम्हारे रास्ते में नहीं पड़ते या फिर तुम उनको बहुत छोटा समझकर उनसे बात नहीं करतीं। गंगा बोली- "नहीं स्वामी ! ऐसा नहीं है।" सरकंडों का तो वन हमारे किनारे उग आता है। हम उनसे कल-कल करके घंटों बातें करती रहती हैं। सरकंडा छोटा है तो क्या है, लेकिन बड़ा विनम्र होता है। उसे पता है कि किस स्थिति में क्या करना चाहिए?

हमारी लहरें जब तट को तोड़कर बहती हैं, तो हमारा जल सरकंडों तक पहुँचता है तो वे झुक जाते हैं। झुकते भी उसी ओर हैं जिस ओर हमारा बहाव होता है। सरकंडे की जड़ें गहरी नहीं होती, उनका तना भी नहीं होता, पर फिर भी हम उन्हें नहीं बहा पातीं। जैसे ही हमारा पानी उतरता है वे फिर शान से खड़े हो जाते हैं और हंसते-हंसते जीते हैं। तेज हवाएं बहती हैं तब भी वे यही करते हैं।

"और इतने बड़े-बड़े वृक्ष कैसे ढह जाते हैं?"
समुद्र ने पूछा।

गंगा बताने लगी- "वृक्ष बड़े घमण्ड से सिर ताने खड़े रहते हैं। हमारा जल उनके तनों से टकराता है तो वे बड़े अभिमान से कहते हैं- अरी लहरों, भागो यहां से, नहीं तो टकराकर चूर-चूर हो जाओगी। उन्हें अपने बड़प्पन का बड़ा अहंकार है। उसी अहंकार से वे ढह जाते हैं, घमंडी सदैव ही दुख पाता है। समुद्र ने सोचा- वही उन्नति कर पाता है जो व्यर्थ का अभिमान नहीं करता। चाहे वह रूप का हो, धन का हो या फिर शक्ति का हो। अभिमान सभी बुरे हैं।

संतोष टुटेजा
अनुभाग अधिकारी (वित एवं लेखा)
प्रधान कार्यालय

शास्त्रीय संगीत एक वरदान

मानव जाति को संगीत के रूप में एक अमूल्य जड़ी-बूटी मिली है। शास्त्रीय संगीत, भक्ति गीत सुनकर उसकी कई बीमारी, तकलीफें तथा अड़चने दूर रहती हैं। उच्च रक्तचाप, मधुमेह तथा गुस्से को नियंत्रित करता है। बुरी आदतों से दूर रहने से लोगों को नुकसान नहीं पहुचाता। इसलिए समाज में लोग उसे आदर भाव से देखते हैं। वे अपना कार्य हर्ष और उल्लास से करते हैं। पेड़ के नीचे बैठकर संगीत का रियाज करने से पंछी भी अपने सुर में सुर मिलाते हैं। गाय तथा भैंस को संगीत सुनाया गया, तो वे भी अच्छा दूध देते हैं। पेड़, पौधो को संगीत सुनाने से वे भी ज्यादा से ज्यादा फल और फूल देते हैं। शास्त्रीय संगीत में ऐसा जादू है कि अस्पताल में मरीज भी जल्द से जल्द ठीक हो जाते हैं। अगर कारागृह के कैदियों को संगीत सुनाया गया तो उनका भी मन परिवर्तित होकर अच्छे नागरिक बन सकते हैं। इसलिए पाठशाला में संगीत सीखे हुए बच्चे बचपन से ही देश के अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा

यह धुन देश के बड़े दिग्गज कलाकारों न गायी है। उनके अथक परिश्रम और कड़ी तपस्या ने उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया के कोने-कोने में पहुंचाया तथा संगीत का प्रचार हुआ। पंडित भीमसेन जोशी, लता मंगेशकर परिवार, रेणु मजूमदार, बिस्मिल्ला खान, अमजद अली खान, अल्ला रक्खां, जाकिर हुसैन, प्रेम सुब्बुलक्ष्मी, पंडित निखिल घोष जैसे कई बड़े दिग्गज कलाकारों ने सारी दुनिया को संगीत के जादू में बांध दिया है। संगीत सीखने के लिए तथा सुनने के लिए किसी भाषा की जरूरत नहीं पड़ती। यहां बहुत सारे सुर, ताल, लय सीख सकते हैं। अगर दुनिया से गुनेहगारी खत्म करनी है तो हर इंसान को शास्त्रीय संगीत सीखना जरूरी है। तभी तो दुनिया में शांति रहेगी।

पहला प्रयास
वि. श्री प्रभु
विष्णुमूर्ति श्रीधर प्रभू
10421/ अभियांत्रिकी विभाग
ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर (प.क्षे.)

निर्भया

हर तरफ बस लाश ही लाश है।
मेरी आस्था की लाश,
मेरी लालसा की लाश,
मेरी सोच की लाश,
मेरी आत्मा की लाश।
मेरा नाम निर्भया क्यूं रखा?
मेरे तो जन्म में भय था,
मेरे होने का।
मेरे बचपन में भय था,
मेरे कुरूप होने का।
मेरे बड़े होने में भय था,
मेरे ब्याह का।
मेरे जीवन में भय था,
एक मेरे और होने का।
मेरी जिंदगी ही भय थी मैं बेटी थी।
चार हैवान उस रोज चढ़े थे बस में।
हजारों अभी भी सड़क पर हैं घूमते।
कभी एक निर्भया शक्ति मिल में घूमिल होती है।
कभी निर्भया सड़कों पर भयभीत होती है।
इस अजात निर्भयता की असार्थकता से,
मुझे मुक्त करा दो।
उड़ उड़कर बस मैं ये कह पाऊं,
मैं निर्भया हूं,
क्यूंकि मैं बेटी हूं।।
क्यूंकि मैं बेटी हूं।।

अभिनव कुमार
कनिस्ट तकनीशियन

अजन्मी कन्या की पुकार

मैं सोच रही थी,
कब निकलूंगी बाहर?
और देखूंगी सारा संसार?
बार-बार आ रहा था सवाल मन में कि
इस देश के लोग कैसे होंगे कौन होंगे?
लड़की की इज्जत करते होंगे?
मां कैसी होगी? कौन होगी?
मुझको प्यार करती होगी?
अचानक,
ये ख्याल बंद हो गए
दम घुटने सा लगा मेरा
मैंने सोचा से घिरा कैसा अंधेरा?
बंद हो गई सांसे मेरी
सारे सवालों का जवाब तो मिला,
बस यह रह गया
"मां तुमने मुझे क्यूं मारा?"

.....दीप्ति सिंह
पुत्री श्री कामेश्वर प्रताप सिंह
कर्मचारी सं. 20178
उत्तरी क्षेत्र

छोटी सी जिन्दगी अपनी

छोटी सी जिन्दगी अपनी
जिसका हर छोटा सा पल।
धन संपत्ति के पीछे भागकर,
मच गई इसमे हलचल।
हंसने रोने का वक्त नहीं,
चल कहां रहे है पता खुद को नहीं।
यूं ही बीत जाएगी जिंदगी,
जब एहसास होगा पास हमारे वक्त ही नहीं।
जी लो जिन्दगी के हर छोटे से पल को,
क्या पता भगवान का बुलावा आए कल को।

शीतल यशवंत सालुंखे
कनिष्ठ सहायक (वित्त एवं लेखा)

पवन हंस की पुकार

नभ में विचरण हंस करे तब
पवन धन्य हो जाती है,
हंस चूमे पवित्र धरा को तब
धरती आभार प्रकट करती है,
देवी सरस्वती की अपार अनुकंपा से...
जीवन यात्रा सफल हो हम सब की,
पवन... देवी के परम हंस से यही
बारंबार विनती करती है।

.....चेतन बेहल
उपमहाप्रबंधक (कार्यशाला)
पश्चिमी क्षेत्र

घर का वैद्य

ठंड अगर लग जाए जो
नहीं बने कुछ काम,
नियमित पी लें गुनगुना,
पानी दे आराम..।

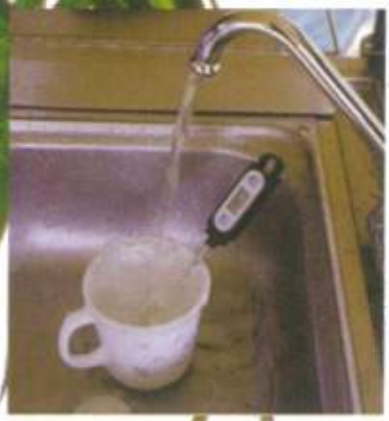

अजवाइन लें छाछ संग,
मात्रा पांच गिराम,
कीट पेट के नष्ट हों,
जल्दी हो आराम...।
कफ से पीड़ित हो अगर,
खांसी बहुत सताए,
अजवाइन की भाप लें,
कफ तब बाहर आए...।
अजवाइन को पीसिए,
गाढ़ा लेप लगाएं,
चर्म रोग सब दूर हों,
तन कंचन बन जाए....।
अजवाइन को पीस लें,
नींबू संग मिलाएं,
फोड़ा-फुंसी दूर हों,
सभी बला टल जाएं...।

पीता थोड़ी छाछ जो,
भोजन करके रोज,
नहीं जरूरत वैद्य की,
चेहरे पर हो ओज...।
नींबू बेसन जल शहद,
मिश्रित लेप लगाएं,
चेहरा सुंदर तब बने,
बेहतर यही उपाय...।
दही मथे माखन मिले,
होठों पर लेपित करें,
रंग गुलाबी आय...।
बहती यदि जो नाक हो,
बहुत बुरा हो हाल,
यूकेलिप्टिस तेल लें,
सूंघे डाल रुमाल...।
दर्द अगर आने लगें,
[illegible] साथ,
दालचीनी का काढ़ा,
लें पानी के साथ...।

हमारा इंडिया दिल से हिन्दी

India is our country
we all love *"sukh-shaanti"*
though we have different boli-
be it gujrati, Marathi, Bengali,
tulu, Punjabi, urdu,... others and konkani
but we speak with each other *"Dil se"* in *"HINDI"*
and also play together colorful Holi

India is our country
we all love "sukh-shaanti"...

we have many delicacies
appam, dosa, vade-pav
punjabi samosa
khandwi-dhokla, jalebi-phapada
crispy khakra
sevpuri, biryani
idli-vada- sambar
papad, kaiei/ nimbu/mirchi, ka achaar,....."
taste ka bhandar
we have different cultures-
pongal, sankrant, id, vaisakhi, others..... and diwali
but we celebrate together under one *"Tiranga"*
"saare jahan se accha hindustaan hamara"

India is our country
we all love "suku-shaanti"...

we have many dress codes:
nav-warri, kanchipuram, patola, paithani'
punjabi salwar-kurti, bandhani,ghagra-choli,
sharara, garara, lucknowi....
pajama-kurta, dhoti, lungi, pagdi, others..... and pathani
may we all look different
but *Dil se* sab hindustani !

India is our country
we all love "sukh-shaanti"....

We have bhandars of musical instruments
be it *tabla, sarangi, bansuri*
dilruba, veena, sarod, tanpura, sarangi
for all sorrows or happiness
when played touches the heart deeply

we have folk dances:
be it ghoomar, bhangda, dandiya, kuchipudi
Bihu da, garba, karhak, others.....and koli
gives all souls not only joy also make body strees free

India is our country
we all love "sukh- shaanti"....

we are proud to be ***Indians***
because our soil gave us
great Father of Nation.
great Aryabhatta- our Hero
who gave the world "Zero"
jawaharlal, Bhabha Sahcb Ambedkar,
Rani Laxmibai & other great freedom fighters
we have history with great saints/writers/philosiphers/scholars
be it Tukaram/Eknath/Premchan/ Swami Vivekanand & others

India is our country
we all love "sukh-shaanti"....

we all salute our sportsmen/ sportswomen
be it P.T.Usha, Sania Mirza, Marykom,
who brought us glory
by wining us gold/silver medals
in the Olympics & others
and those who won the World Cup
be ir Dhoni, Sachit Tendulkar...

India is our country
we all love "sukh-shaanti".....

we are great flyers
be it airbus or helicopters
we can dive intp deep sea
to explore oil & other resources
we fee great that we run metros
and canm compete with any one
be it RESEARCH, IT NASA or any foreign bhasha
because we always keep ***"AASHA"***....

India is our country
we all love "sukh-shaanti".....

नन्हें हाथों का हुनर

AASMI PARAB
D/o ARUNA G. PARAB
SR. OFFICE ASST.-I
PNA DEPT (WR)
[9 YRS. CLASS IV]

कुमारी अलका (हाथों की कला)
पुत्री श्रीमती मधुबाला (कार्मिक)
प्रधान कार्यालय

दिनांक 24-09-2014 को पूर्वी क्षेत्र, गुवाहाटी में आईएमएस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें श्री आर बी कुशवाहा, उप महाप्रबंधक (प्रशासन)/एमआर द्वारा कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 25/09/2014 को पूर्वी क्षेत्र गुवाहाटी कार्यालय में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के अंतर्गत श्री आर बी कुशवाहा, उपमहाप्रबंधक (प्रशासन) प्रधान कार्यालय, नोएडा द्वारा पवन हंस की तरफ से रामाकृष्ण मिशन के अधिकारी को एम्बुलेंस की चावी प्रदान करते हुए।

पूर्वी क्षेत्र, गुवाहाटी कार्यालय में दिनांक 26-09-2014 को हिन्दी पखवाड़ा के क्रम में वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

ध्यान योग...

जगवीर सिंह
अनु. अधि (पु.)

महर्षि पातंजलि के अष्टांग योग- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि का सातवां अंश 'ध्यान' बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय अंग माना जाता है। हम अगर अष्टांग योग के पहले छह अंगों को अपनाये बिना ही 'ध्यान'करने लग जायें तो यह केवल एक भ्रम ही होगा 'ध्यान' नहीं। जिस प्रकार से सुदृढ़ नीव के बिना एक मजबूत भवन का निर्माण नहीं हो सकता, उसी तरह से यम एवं नियम को अपनाये बिना 'योग एवं ध्यान' की कल्पना असंभव है। अष्टांग योग के पहले 'अंग' में महर्षि पातंजलि ने अन्य प्राणियों के साथ हमारे व्यवहारिक जीवन को दिव्य, सात्विक एवं मधुर बनाने पर प्रकाश डाला है, इसके पांच अंश हैं।

अहिंसाः- मन, वाणी एवं शरीर से किसी भी वाणी को दुख, कष्ट न देना अहिंसा है।

सत्यः- कपट और छल के बिना व्यवहार ही सत्य है।

अस्तेः- चोरी न करना व अपने कर्तव्य का पाल ईमानदारी से करना ही अस्तेय है।

ब्रह्मचर्यः- संयमित जीवन जीना ही ब्रह्मचर्य है।

अपरिग्रहः- आवश्यकता से अधिक सामग्री का नियम संचय न करना ही अपरिग्रह है। नियमों का सम्बंध हमारे शरीर इन्द्रियों एवं अन्तःकरण के साथ होता है। इनके पालन से चित्त सात्विक, पवित्र एवं दिव्य हो जाता है। इसके भी पांच उपांग हैं।

शौचः- शरीर की बाहरी एवं भीतरी शुद्धता।

संतोषः- फल की प्राप्ति में संतुष्ट होना।

तपः- अपने कर्तव्य-पालन में दृढ़ होना।

स्वाध्यायः- नियमित अध्ययन जिससे कर्तव्य का बोध हो सके।

ईश्वर प्राणिधानः- ईश्वर के शरणागत हो जाना। अष्टांग योग में पहला अंग 'यम' कितना शक्तिशाली है कि 'अहिंसा' पर पूरा हमारा जैन धर्म टिका हुआ है एवं केवल सत्य एवं अहिंसा को अपनाकर महात्मा गांधी जी ने अंग्रेजी की सैकड़ों साल पुरानी जड़ें हिला दीं। सत्य से बड़ा कोई तप नहीं, कोई शक्ति नहीं। यम नियम को अपनाकर हम, शारीरिक एवं मानसिक रूप से पूर्ण शुद्ध स्वच्छ एवं दिव्य हो जाते हैं। छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, भेदभाव को भूलकर सभी प्राणियों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार हो जाता है, जिससे मन शांत, पवित्र होकर 'ध्यान' लगाने योग्य बन जाता है। आसन एवं प्राणायाम को अपनाकर हमारा शरीर पूर्णरूप से सुदृढ़ एवं स्वस्थ हो जाता है जो ध्यान लगाने के लिए अति आवश्यक है। अगर हम पूर्ण रूप से शारीरिक व मानसिक स्तर पर स्वस्थ नहीं है तो 'ध्यान' में बैठ ही नहीं सकते। इसलिए 'ध्यान' के लिए यम नियम को अपनाकर आसन व प्राणायाम के द्वारा शरीर को पूर्ण रूपेण स्वस्थ्य रखना अनिवार्य है। 'ध्यान' को लगाने के लिए मन को वश में करना आवश्यक है, मन को वश में करने के लिए इन्द्रियों को वश में करना होगा। जब इन्द्रियां अपने स्वाद को प्राप्त करने के लिए अपने विषय की ओर दौड़ती है तो उस समय इन्द्रियों को उस ओर न जाने देना 'प्रत्याहार' कहलाता है। रूप-स्वरूप का उपयोग आंखें करती हैं और नाक का विषय है सुगन्ध। छह रसों का भोग नाक का विषय है सुगन्ध। छह रसों का भोग जीभ करती है और सुरीले शब्दों का उपभोग कान करते हैं और स्पर्श का उपभोग त्वचा करती है। इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों से अलग कर लेना ही प्रत्याहार है। जैसे-जैसे प्राण वश में होता है। वैसे-वैसे मन भी वश में होने लगता है, तब विषय की महत्ता समाप्त हो जाती है। इसीलिए पहले प्राणायाम किया जाता है। 'ध्यान' से पहले 'धारणा' आवश्यक है। स्थूल से सूक्ष्म किसी भी एक विषय में चित्त की एकाग्रता ही धारणा है। धारणा में क्रमशः स्थूल से प्रारम्भ करके सूक्ष्म की ओर जाना चाहिए। 'ध्यान' हमारी अंतस सत्ता है हम ध्यान के साथ ही जन्मे हैं। 'ध्यान' हमारा स्वभाव है, 'ध्यान' कोई बाहरी क्रिया नहीं है। हम हर समय ध्यान में रह सकते हैं। अपने दैनिक कार्य व आफिस के कार्य को करते समय उसी में तल्लीन रहो। खाते समय केवल खाने में ध्यान रहे, चलते समय केवल चलने में ध्यान रहे। ध्यान से पहले अति आवश्यक है। हमारा सौहार्दपूर्ण स्वभाव अपने परिवार में अपने पड़ोसियों के साथ एवं अपने कार्यस्थल पर अपने सहकर्मियों के साथ। जब हम किसी से ईर्ष्या करते हैं एवं मन में द्वेष की भावना रखते हैं, क्षमा भावा नहीं रखते और कहते हैं कि हम उसे मरते दम तक क्षमा नहीं करेंगे। इसमें हम अपना ही अहित करते हैं। स्वयं को जलाकर अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं। जब तक हममें प्रेम, त्याग, क्षमाभाव एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार नहीं है। हमारा मन स्वच्छ नहीं हो सकता एवं हम शांत व स्थिर नहीं हो सकते। शांत व स्थिर हुए बिना हम एकाग्र नहीं हो सकते, एकाग्रता के बिना 'ध्यान' नहीं लग सकता।

11.07.2014 को पवन हंस के प्रधान कार्यालय में श्री पीयूष जी द्वारा संचालित ध्यान योग शिविर की झलकियां

पवन हंस लिमिटेड पूर्वी क्षेत्र की पहल

हरि गायत्री स्कूल और स्थानीय स्वयंसेवकों के सहयोग से पवन हंस लिमिटेड ने दिनांक 14.09.2014 को गुवाहाटी एयरपोर्ट के निकट अजारा में पश्चिमी गुवाहाटी के विभिन्न स्कूलों के छात्रों के लिए एक प्रतिभा खोज कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान निम्न आयोजन सम्पन्न हुए।

प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी

1. निबंध लेखन - जीवन का लक्ष्य और मनपसंद त्योहार, आपका पसंदीदा जानवर
2. प्रश्नोत्तरी - सामान्य
3. चित्रांकन - राहत अभियान, त्योहर, प्राकृतिक दृश्य

समूह1 : 5-6 कक्षा
समूह2 : 7-8 कक्षा
समूह3 : 9-12 कक्षा

सामूहिक स्वागत गान

प्रतिस्पर्धा प्रातः प्रारम्भ हुई, जिसमें भारी संख्या में छात्रों की प्रतिस्पर्धा ने जजों के लिए निर्णय लेना चुनौतीपूर्ण बना दिया, क्योंकि प्रत्येक प्रतिभागी ने प्रतिस्पर्धा में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और प्रत्येक ने अनुपमअभिव्यक्ति का प्रदर्शन किया। अंततः सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुति देने वाले योग्यतम छात्र को विजेता के रूप में चुना गया व पवन हंस के प्रयोजन से पुरस्कारों का वितरण किया गया।

ट्राफी के प्रायोजक पवन हंस लिमिटेड, पूर्वी क्षेत्र

पवन हंस द्वारा नौनिहालों के लिए अल्पाहार का प्रबंध किया गया था। हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर पूर्वी क्षेत्र में एक नए प्रकार से देश के नौनिहालों के मध्य पवन हंस की भूमिका सुस्थापित करने के प्रयास के रूप में उत्कृष्ट प्रयास की झलकियां।

S.K. SRIVASTAVA, IAS

सत्यमेव जयते
Government of India

मुख्य सचिव
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली-110002
CHIEF SECRETARY
GOVT. OF NATIONAL CAPITAL
TERRITORY OF DELHI
DELHI SECRETARIAT, IP
ESTATE, NEW DELHI-110002
Tel.: 2339 2100, 2339 2101
Fax: 011-2339 2102
E-mail: csdelhi@nic.in

D.O.No.PS/CS/Delhi/2014/44
3rd/4 July, 2014

Dear Shri Sahay,

It was nice meeting you at Neelgrath. I was impressed by the efficient services being provided by Pawan Hans under your leadership.
Please convey my best wishes to Captain Ajay Srivastava, DGM (Ops) as well.

I hope services to Amarnath Dham is going well and will continue uninterruptedly.

With regard

Yours sincerely

(S.K. Srivastava)

Sh. Dhirendra Sahai
General Manager (Northern Region)
Pawan Hans Limited
Safdarjung Airport
New Delhi-110003

राष्ट्र का अभिमान, निपुण उड़ान

WE FLY FOR YOU

पवन हंस लिमिटेड

Pawan Hans Limited

(A Government of India Enterprise)

www.pawanhans.co.in

Printed & Designed By : K C Prakashan Pvt Ltd., Mob : +91-7869803333